राष्ट्रदूत

राष्ट्रदूत जालोर, 30 दिसम्बर, 2024 मारवाड़

राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता नहीं मिलना दुर्भाग्यपूर्ण : प्रो. अर्जुनदेव

जोधपुर में 'सौभाग्यसिंह शेखावत : जीवण अर सिरजण' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद आयोजित हुआ।

जोधपुर, (कासं)। राजस्थानी साहित्य में एक तरफ जहां राज्य में [illegible] लोग कवियों के साथ पूजते थे वहीं दुर्भाग्य यह है कि देश की आजादी के [illegible] वर्ष बाद भी इस भाषा को संवैधानिक मान्यता नहीं मिली। राजस्थान वीरों की भूमि है। इसके प्रमाण देने के साथ ही राजस्थानी भाषा-साहित्य आने वाली पीढ़ी को नई जमीन प्रदान करती है। सौभाग्यसिंह शेखावत जैसे विद्वान इसी राजस्थानी भाषा-साहित्य की [illegible] के सच्चे साधक थे। यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य अकादेमी एवं जेएनवीयू के राजस्थानी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में होटल चन्द्रा इम्पीरियल में आयोजित 'सौभाग्यसिंह शेखावत : जीवण अर सिरजण' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद में व्यक्त किये।

संगोष्ठी संयोजक एवं राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने बताया कि इस अवसर पर सारस्वत अतिथि जेएनवीयू के कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) कन्हैयालाल श्रीवास्तव ने कहा कि राजस्थानी भाषा एक समृद्ध एवं स्वतंत्र भाषा जिसे संवैधानिक मान्यता मिलनी चाहिए।

उन्होंने इस संबंध में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि अगर समय रहते राजस्थानी को संवैधानिक नहीं मिली तो राजस्थानी संस्कृति खत्म हो जायेगी। प्रोफेसर श्रीवास्तव ने सौभाग्यसिंह शेखावत को राजस्थानी का एक सजग [illegible] साधक बताया। प्रोफेसर (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत ने अपने मुख्य अतिथि उद्बोधन में कहा कि सौभाग्यसिंह शेखावत की प्रतिभा अद्भुत थी, जिसकी वजह से उन्होंने राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति के इतिहास विषयक महत्वपूर्ण सृजन किया।

उन्होंने कहा कि उनका सृजन राजस्थानी साहित्य की अनमोल धरोहर है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. इन्द्रदान चारण ने किया।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित राजस्थानी विशेषांक समकालीन भारतीय साहित्य एवं डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित की संपादित पुस्तक [illegible] साहित्य साधना का लोकार्पण किया।

परिसंवाद में आयोजित दो साहित्यिक सत्रों के अंतर्गत [illegible] ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में [illegible] राजस्थानी भाषा-साहित्य का [illegible] साधक बताया तो डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सौभाग्यसिंह शेखावत को एक [illegible] रचनाकार बताते हुए उनके साहित्य की विवेचना की। इस अवसर पर जीतू शेखावत ने सौभाग्यसिंह शेखावत का जन्म एवं जीवन संघर्ष, डॉ. संजय कुमार शर्मा - राजस्थानी विद्यापीठ में सौभाग्यसिंह शेखावत का योगदान, डॉ. मदनसिंह राठौड़ - सौभाग्यसिंह शेखावत का राजस्थानी साहित्य एवं इतिहास में योगदान एवं डॉ. सद्दीक मोहम्मद - राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी में सौभाग्यसिंह शेखावत का सृजन विषय पर महत्वपूर्ण आलोचनात्मक शोध पत्र प्रस्तुत किये। साहित्यिक सत्रों का संचालन डॉ. [illegible] चारण एवं [illegible] मोहन राठौड़ ने किया।

राजस्थानी परिसंवाद के समापन सत्र में प्रतिष्ठित राजस्थानी विद्वान एवं इतिहासविद् प्रोफेसर जहूर खां मेहर ने सौभाग्यसिंह शेखावत के साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा उन्होंने जीवनपर्यन्त ईमानदारी से राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति विषयक महत्वपूर्ण शोधकार्य संपादित किये। मुख्य अतिथि ख्यातनाम कवि-आलोचक डॉ. आईदानसिंह भाटी ने कहा कि लोक का ज्ञान हमेशा शास्त्रीय ज्ञान से बड़ा होता है। संगोष्ठी संयोजक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने सभी मेहमानों एवं उपस्थित लोगों का आभार प्रकट किया। सत्र का संचालन संतोष चौधरी ने किया।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की मूर्ति पर पुष्पमाला अर्पित कर दीप प्रज्वलित किया गया। तत्पश्चात पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह के देवलोक गमन होने पर दो मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समारोह में प्रतिष्ठित रचनाकार प्रोफेसर सत्यनारायण, प्रोफेसर कौशलनाथ उपाध्याय, कल्याण सिंह राठौड़, डॉ. चांद कौर जोशी, बसंती पंवार, माधव राठौड़, निर्मला राठौड़, [illegible], पूजा राजपुरोहित, रेणु वर्मा, [illegible], संतोष चौधरी, डॉ. [illegible], [illegible], [illegible], डॉ. [illegible], [illegible], डॉ. [illegible], डॉ. [illegible] सिंह [illegible], [illegible] राठौड़, [illegible] कुमार चौधरी, [illegible], जीतू राजपुरोहित, [illegible], [illegible], [illegible] आदि मौजूद रहे।